(6)

वंदना शिवा इस बहस में एक अलग आयाम रखती हैं और सिर्फ वैचारिक धारा को नहीं पर वास्तविक अनुभवों को भी महत्व देती हैं। वह "चिपको आंदोलन" में निभाई गई महिलाओं की भूमिका द्वारा पर्यावरण व स्त्री के बीच के संबंध को समझने की कोशिश करती हैं। वह यह भी दिखाती है कि आधुनिक बदलाव कैसे भारतीय दर्शन के पारंपरिक विचारधारा को प्रभावित करते हैं। सांख्य दर्शन में प्रकृति को स्त्रीलिंग और पुरुष (चेतना) को पुल्लिंग दिखाया गया है। और संसार निर्माण में दोनों के महत्वपूर्ण योगदान पर चर्चा की गई है। पर मशीनीकरण होने के बाद प्रकृति व स्त्री को सिर्फ निष्क्रिय और पुरुष के अधीन कर दिया गया। शिवा के आकलन में भी कुछ कमियां रह जाती हैं वह सिर्फ गरीब ग्रामीण महिलाओं के अनुभवों की चर्चा करती है और उन्हीं अनुभवों के आधार पर अपने निष्कर्षों को सार्वभौमिकता प्रदान करते तीसरी दुनिया के लिए भी सत्य मानती हैं। दूसरा वह आधुनिक विचारधारा की ओर बदलाव के कारण और उनका पारंपरिक भारतीय विचारधारा पर प्रभाव भी स्पष्ट रूप से नहीं दिखा पाती। तीसरा वह स्त्री व प्रकृति पर प्रभुत्व की शुरुआत भूमण्डलीकरण के समय में देखती है और उससे पूर्व समय में आर्थिक व सामाजिक असमानताओं की भूमिका को नज़रअंदाज कर देती हैं।

नारीवादी पर्यावरणवाद — इन्हीं आधार पर बीना अग्रवाल एक विकल्प के तौर पर "नारीवादी पर्यावरणवाद" की बात करती हैं जो पारिस्थितिक नारीवाद की तरह सिर्फ वैचारिक (ideological) ना होकर वास्तविक (material) अनुभवों और प्रभुता के आर्थिक और सामाजिक पहलुओं का भी आकलन करे। यह बदलाव नारीवादी आंदोलन और पर्यावरण संरक्षण संबंधित आंदोलन के समान लक्ष्य को हासिल करने में मददगार होगा

(16) (5)

पारिस्थितिक नारीवाद इस तरह इन बिन्दुओं पर प्रकाश डालता है
① – नारी और प्रकृति का सांकेतिक निर्माण और उन पर प्रतिक्रिया के वैचारिक संबंध
② – नारीवाद और पर्यावरणवाद दोनों का आधार और पक्ष में समानता
③ – वैकल्पिक विचार जिसमें दोनों एक-दूसरे के लिए लाभकारी हों।

पर पारिस्थितिक नारीवादी तर्क में कुछ कमियां भी नज़र आती हैं —
(1) – स्त्री को एकमात्र समूह मानना। वह स्त्रियों के मध्य वर्ग, जाति, संस्कृति के आधार पर अलग-अलग नहीं रखता।
(2) – यह स्त्री और प्रकृति पर प्रभुत्व का सिर्फ सैद्धांतिक स्तर पर विचार करता है और राजनैतिक, आर्थिक शक्ति, कार्य के आधार पर प्रभुत्व की वास्तविकता को नहीं देखता।
(3) – सैद्धांतिक स्तर पर भी सिद्धांत निर्माण में अन्य कारकों के रोल को नहीं देखता।
(4) – स्त्री के पर्यावरण के साथ संबंध और और उसके अनुभव को नज़रअंदाज़ कर देता है।
(5) – पारिस्थितिक नारीवाद तात्विक विचारधारा (essentialism) की तरफ झुक जाती है तब वह नारी और प्रकृति के बीच के संबंध को सिर्फ जैविकी पर आधारित मानती है।

इन सबकी कमियों को तभी दूर किया जा सकता है जब सैद्धांतिक निर्माण के पीछे की राजनैतिक आर्थिक व्यवस्था को समझा जाए (the political economy of ideological construct)।

दर्शन मित्र

4

इस्तेमाल हो रहा था। लेकिन दोनों यह भी मानते हैं कि औरतों को इनकी बायोलोजी के कारण वैचारिक रूप से प्रकृति के करीब माना गया है।

मर्चेंट अपने ऐतिहासिक विश्लेषण में दिखाते हैं कि पूर्व आधुनिक यूरोप में औरत और प्रकृति के संबंधों की धारणा दो तरह की छवियों पर आधारित है। एक छवि है प्रकृति को नष्ट होने से रोकने की और दूसरी नष्ट होने देने की। दोनों में प्रकृति को औरतों से जोड़ा गया है। पहली छवि, जो काफी प्रभावशाली थी, में धरती को मां माना गया और फिर संस्कृतियों में ये यह भी जुड़ता चला गया कि इस धरती मां के साथ क्या और कैसा बर्ताव किया जाए, कोई मां का शोषण नहीं करता। उसकी हत्या नहीं करता। इसके उलट छवि थी की प्रकृति हिंसक है, आंधी तूफान, सूखा और अराजकता लाती है। फिर संस्कृतियों में यह शामिल हो गया कि प्रकृति पर काबू पाना चाहिए। इस पर इंसान का प्रभुत्व होना चाहिए।

मर्चेंट कहती हैं कि 16वीं व 17वीं शताब्दी में सांइस रिवोलुशन और मार्केट आरियेंटड कल्चर की वजह से पृथ्वी की एक जीवित स्त्री की तरह बनाई छवि धूमिल हो गई। और मकैनिकल व्यु सामने आया जिसमें प्रकृति को इस तरह से देखा गया जिस पर मानव प्रभुत्व स्थापित किया जा सकता है।

मर्चेंट कहती है कि आज के समय में जरूरी है कि नारीवादी आंदोलन और पर्यावरणवादी आंदोलन साथ में आए और कुछ नए मूल्य स्थापित करें जो प्रकृति या स्त्री प्रभुता पर आधारित ना हो पर स्त्री और पुरुष दोनों के समान विकास और पर्यावरण की सम्पूर्णता को बचाने की बात करें।

दर्शन मित्र

(15) (3)

औरतों और गैर मानवीय जगत को मर्दों से कमतर माना गया है। यह मांग करता है कि औरत और मर्द अपने बारे में फिर से विचार करें। यह पुनर्मूल्यांकन ऐसे संदर्भ में हो जिसमें बराबरी की बात हो। फिर शायद हम पूछ सकते हैं कि - प्रकृति और औरतों के बीच के संबंधों की जड़ कहां है।

शेरी ऑर्टनर ने समकालीन नारीवादी दृष्टिकोण में इस बात को शामिल किया है कि औरतें मर्दों से ज्यादा प्रकृति के करीब हैं। शेरी के शुरुआती तर्कों में औरत और प्रकृति के संबंधों की जड़ पुनर्उत्पादन की जैविक प्रक्रियाओं में है। लेकिन तब भी ऑर्टनर के यह बात मानती थी कि मर्दों की तरह औरतें भी प्रकृति और संस्कृति में हिस्सा लेती हैं। ऑर्टनर ने अपना नजरिया थोड़ा बदला भी है। क्योंकि प्रकृति और संस्कृति में अंतर सार्वभौम नहीं है। फिर भी कुछ पर्यावरणवादी नारीवादी जैविक धारणा को मानते हैं और अलग - अलग तरीके से दोहराते हैं। एरियल सल्लेह तो इस धारणा को एक और छोर पर ले जाती है उनका कहना है कि -

औरतों का माहवारी चक्र, गर्भ की पीड़ा, मां बनना, बच्चे पालने का आनंद... ये वो चीजे हैं जो औरतों की चेतना को प्रकृति से जुड़े ज्ञान के करीब ले आती हैं। हो सकता है कि औरतें इसके बारे में सचेत न हों मगर यह जीवन का एक सत्य है।

येनस्ट्रा किंग और कारोलिन मर्चेंट का तर्क है कि प्रकृति और संस्कृति का अंतर गलत है। यह सब एक तरह पितृसत्तात्मक विचारधारा की देन है जो समाज के लिंग आधारित प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए

2
दर्शन मित्र

I

कुछ अवधारणात्मक मुद्दे

पर्यावरण नारीवाद में विमर्शों की कई धाराएं आकार मिलती हैं। इनमें से कई विमर्श ऐसे हैं जिन्हें अभी ठीक से समझा जाना बाकी है। शायद है पश्चिमी नारीवादी आंदोलनों में इसे लेकर अलग अलग नजरिए अपनाया जाता रहा है इसलिए एक व्याख्या के रूप में पर्यावरण नारीवाद का अभी पूर्ण विकास नहीं हुआ है बल्कि हो रहा है। हां लेकिन इससे हम मुंह नहीं मोड़ सकते। पूरे विमर्श की कई धाराओं से हम पर्यावरण नारीवाद तर्कों के बारे में मोटी तस्वीर कुछ ऐसे देख सकते हैं:-

(1) प्रकृति का प्रभुत्व और शोषण के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

(2) सरसरी तौर पर औरत को प्रकृति और पुरुष को संस्कृति के करीब माना गया है। प्रकृति को संस्कृति से कमतर देखा गया है। इसलिए औरतों को मर्दों से कमतर माना गया है।

(3) क्योंकि औरतों और प्रकृति का प्रभुत्व साथ साथ आया है इसलिए प्रकृति के खत्म होते प्रभुत्व में औरतों का खास स्टेक है।

(4) पर्यावरण और नारीवादी आंदोलन दोनों समानतावाद की वकालत करते हैं जिसमें कोई छोटा बड़ा नहीं है। लिहाजा दोनों की मंजिल एक है इसलिए जरूरत है कि दोनों साथ मिलकर एक समान परिप्रेक्ष्य, थ्योरी और आचरण का विकास करें।

इसलिए पर्यावरण नारीवाद के तर्क में औरतों और प्रकृति के प्रभुत्व के बीच के संबंध को वैचारिक स्तर पर देखा गया है। यह आप सभी तरह के विचारों, मूल्यों, मान्यताओं में पाएंगे कि

The Gender and Environment Debate : Lessons from India

43

1 (1) लिंग और पर्यावरण संबंधी बहस (14) : भारत से कुछ पाठ (भारत के संदर्भ में)

— बीना अग्रवाल

स्त्री का पर्यावरण के साथ क्या संबंध है? क्या यह पुरुष से अलग है? अमेरिका में पारिस्थितिक नारीवाद पर लिखे साहित्य में लिंग और पर्यावरण के बीच के संबंध को सैद्धांतिक रूप में देखने को मिला। विकासशील दुनिया में जीवित रहने की जद्दोजहद दूसरी तरफ इस संबंध के व्यावहारिक पहलू की ओर इंगित करती है जो पारिस्थितिक नारीवाद का विकल्प जिसे बीना अग्रवाल ने 'नारीवादी पर्यावरणवाद' कहा के रूप में देखती है।

बीना अग्रवाल अपने इस लेख में तर्क करती हैं कि एक तरफ तो पर्यावरण क्षय ने महिलाओं विशेष रूप से ग्रामीण वर्गीय, को प्रभावित किया। वहीं दूसरी ओर वह सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में पर्यावरण संरक्षण में हिस्सेदार बनी। अपने इस तर्क को रखने के लिए लेखिका अपने लेख को पांच भागों में बाँटती है।

1) अमेरिका में पारिस्थितिक नारीवादी बहस और एक प्रमुख भारतीय नजरिया जो अमेरिकन बहस से अलग है यह एक नया विकल्प देता है।
2) पर्यावरण ह्रास के कारण - ग्रामीण भारत में
(3) पर्यावरण ह्रास का वर्ग (class) - लिंग (gender) पर प्रभाव
(4) राज्य व स्थानीय ग्रुप्स की प्रतिक्रिया / उत्तर
(5) विकास पर रूपांतरण के रूप में एक विकल्प